REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2018

खेल का समाजशास्त्र

प्रा.बी.जी.जाधव
(शा.शि.संचालक)
लक्ष्मीबाई भाऊराव पाटील महिला महाविद्यालय, सोलापूर

प्रस्तावना :-

जीवन में खेल का बहुत महत्व है। साधारणतः भारतीय परिवारों में खेल को विशेष महत्व प्राप्त नहीं है। परन्तु आधुनिक परिवार का नजरिया तेजी से बदल रहा है। आधुनिक परिवारों में खेल के प्रति एक नया रुझान तथा एक नई जागरूकता पैदा हुई है। डॉ० पी०एन० पांडे ने स्पष्ट किया है कि समाजीकरण की प्रक्रिया में खेल का विशेष महत्व है। उन्होंने तथ्यों के आधार पर रेखांकित किया है कि खेल जीवन को अनुशासित करने में योगदान करता है। मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास अनुशासन के द्वारा होता है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि खेल के क्रम में खेल से जुड़े खिलाड़ियों को विभिन्न क्षेत्रों, प्रांतो तथा देशों में जाने-आने का अवसर प्राप्त होता है। विभिन्न संस्कृतियों से संपर्क होता है। इस प्रकार यह पर संस्कृति ग्रहण का कारण भी है। जाहिर है कि विभिन्न संस्कृतियों के संपर्क के कारण कोई भी व्यक्ति अन्य संस्कृति के तहजीब, रहन-सहन, जीवन पद्धति तथा अन्य कई पहलुओं की जानकारी प्राप्त करता है। इस प्रकार उसके जीवन में भी क्रांतिकारी परिवर्तन होता है। खेल जड़ता को तोड़ता है। खेल यथास्थितिवाद के खिलाफ है। खेल से जुड़े खिलाड़ी गतिशील रहता है। भारत रत्न सांसद सचिन्द्र तेंदुल्कर ने स्पष्ट किया है कि खेल के कारण व्यक्ति को आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा मिलती है। वह जीवन में भी आगे बढ़ता रहता है। उसमें प्रतिस्पर्धा की भावना जगती है। साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि खेल के कारण व्यक्ति टीम चेतना से प्रभावित होता है। सबको साथ लेकर चलने की भावना उसमें विकसित होती है। क्रिकेट के टीम में भी कई खिलाड़ी एक साथ मिलकर मैच के लिए तैयार होते हैं। उनमें एक कैप्टन होता है। साथ ही टीम के साथ एक कोच मी रहता है। परन्तु भारत में खेल के प्रति अभी भी सरकारी तथा गैर-सरकारी स्तर पर सुनियोजित प्रयास नहीं हो रहा है। फलतः ओलम्पिक खेलों के प्रति सरकार तथा जनमानस गंभीर नहीं है। खेल संस्थानों का अभाव है। फलतः व्यक्ति का समुचित समाजीकरण नहीं हो रहा है। देश में अनुशासनहीनता का एक प्रमुख कारण खेल चेतना का अभाव है। इन्हीं तमाम मुद्दों का अध्ययन प्रस्तुत शोध के जरिए रेखांकित किया गया है।

भारत में खेल संघों का चरित्र: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण:

हमारे देश की आबादी लगभग सवा करोड़ से है। जनसंख्या के लिहाज से हम चीन के बाद विश्व में दूसरा स्थान रखते हैं। हमारी अर्थव्यवस्था विश्व की सबसे तेज गति से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के मामले में भी हम

किसी से पीछे नहीं हैं। इन क्षेत्रों में हम विश्व के विकसित देशों को टक्कर देने की स्थिति में पहुँच गए हैं। इतनी प्रगति के बावजूद एक महत्वपूर्ण क्षेत्र ऐसा है जहाँ हम आज भी फिसड्डी साबित हो रहे हैं। सवा अरब जनसंख्या वाला देश ओलंपिक जैसे आयोजन में एक कांस्य तथा रजत पदक तक के लिए तरस जाता है। पदक तालिका में बहुत छोटे-छोटे तथा अविकसित देश भी हमसे काफी जपर रहते हैं।

ऐसा कहना तो बिल्कुल गलत होगा कि हमारे यहाँ खेल प्रतिभाओं का अकाल है। वास्तविकता यह है कि यहीं सही उम्र में न तो खेल प्रतिमाओं के चयन की कोई व्यवस्था है और न ही उनके फलने फूलने का उपयुक्त माहौल है। अभी भी आम आदमी के दिमाग में यह कहावत बहुत गहराई में बैठी हुई है कि पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोगे कूदोगे बनोगे खराब। अधिकांश मामलों में यह कहावत चरितार्थ भी होती है। अक्सर यह खबर आते रहती है कि किसी खेल का राश्ट्रीय खिलड़ी अपना परिवार चलाने के लिए चाट पकौड़ी की ठेली लगा रहा है तो कोई और अन्य काम कर रहा है। कई प्रतिमाओं की तो इस संघर्श के क्रम में उम्र ही निकल जाती है।

किसी भी राष्ट्र को खेल मानचित्र पर उपर लाने में उसके खेल संघो की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हमारे देश में अधिकांश खेलों के संघ तो हैं लेकिन अगर कुछ गिने चुने खेल संघों को छोड़ दिया जाए तो अधिकांश संघ खुद ही कुपोशण के शिकार हैं। कुछ गिने चुने संघ इतने दबंग हो गए हैं कि चनके सामने दूसरे खेल को फलने-फूलने का मौका ही नहीं मिल पा रहा है। इनका व्यवहार तानाशाही को गया है। इनकी रूचि खेल के विकास के बजाए पैसा कमाने तथा राजनीति में ज्यादा हो गई है। इसके साथ ही इसमें भाई-भतीजावाद भी घर कर गया है। हमारे देश में अधिकांश खेलों का बेड़ा गर्क होने का कारण यही है।

प्रस्तुत शोध पत्र में इसी संदर्भ में भारत में खेल संघों के सामाजिक चरित्र को समझने का प्रयास किया गया है। इनके सकारात्मक तथा नकारात्मक पहलुओं की वैज्ञानिक तटस्थता के साथ विश्लेशण की कोशिश की गई है। विकसित देशों के खेल संघो के संरचना एवं कार्य प्रणाली के साथ तुलनात्मक विश्लेशण का भी प्रयास किया गया है। अन्ततः खेल संघो की संरचना एवं कार्य प्रणाली में सुधार से संबंधित कुछ सुझाव भी शामिल किये गये हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धा में भारतीय सामाजिक संरचना का प्रभाव एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

१२५ करोड़ की आबादी वाले देश भारत का प्रदर्शन ओलम्पिक सहित अन्तर्राष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धा में अत्यन्त दयनीय रहा है। जापान, कोरिया, चीन जैसे अन्य एशियाई देशों की तुलना में भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन एशियाई और ओलम्पिकखेलों में संतोषजनक नहीं रहा है। व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा में ओलम्पिक खेलों में कुल जीते गये २६ पदकों से अधिक पदक एक अमेरिकी खिलाड़ी माईकल फैल्प्स ने २८ पदक जीते हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में भारतीय खिलाड़ियों के अन्तर्राष्ट्रीय खेल स्पर्धा में दयनीय प्रदर्शन के कारण को सामाजिक संरचना में ढूँढने का प्रयास किया गया।

उद्देश्य :-

प्रस्तुत शोधपत्र के दो प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है-

१. अन्तर्राष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धा में भारत के खराब प्रदर्शन में आर्थिक पहलुओं के अतिरिक्त सामाजिक संस्चना के साथ अन्तर्सम्बन्धों का विश्लेषण करना।
२. सामाजिक संरचना के खेल प्रतिस्पर्धा पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना।

शोध प्रविधि :-

प्रस्तुत शोधपत्र के लिये मुख्य रूप से अन्तर्राष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धा से सम्बन्धित द्वितीयक तथ्यों को एकत्र किया गया। इसके साथ सामाजिक संरचना एवं सामाजिक व्यवस्था की विशेषताओं का अध्ययन कर इनके अन्तर्सम्बन्धों एवं प्रभावों का विश्लेषण किया गया।

विश्लेषण एवं निष्कर्ष :-

प्रस्तुत शोधपत्र के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि भारतीय खिलाड़ियों के अन्तर्राष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धा में दयनीय प्रदर्शन के पीछे आर्थिक पहलू के साथ-साथ यहाँ की सामाजिक संरचना भी उत्तरदायी है। परम्परागत बन्द सामाजिक स्तरीकरण की व्यवस्था के साथ-साथ पुरुष प्रधानता एवं महिलाओं के प्रति रूढ़िवादी तथा पुरोगामी सोच भी इसके लिये उत्तरदायी है।